ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

# 'कुमाऊँनी भाषा का साहित्य की ओर बढ़ते कदम'

**मनोज कुमार आर्या**
**असिस्टेंट प्रोफेशन हिन्दी**

## संक्षेप

कुमाऊँनी भाषा उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र की प्रमुख सांस्कृतिक पहचान है, जिसका साहित्य मौखिक परंपराओं, लोकगीतों, जागरों, कहावतों और धार्मिक कथाओं में समृद्ध रूप से मौजूद है। हालांकि, वैश्वीकरण, शहरीकरण और हिंदी-अंग्रेज़ी के प्रभाव के कारण यह भाषा संकट में है और इसे साहित्यिक मान्यता और संरक्षण की आवश्यकता है। बीते कुछ दशकों में कुमाऊँनी भाषा का साहित्य की ओर बढ़ता कदम देखा गया है, जिसमें लोक साहित्य, काव्य, नाटक और समकालीन लेखन को नई पहचान मिली है। डिजिटल युग में, कुमाऊँनी साहित्य को सोशल मीडिया, ब्लॉग, पॉडकास्ट और ऑनलाइन प्रकाशन के माध्यम से बढ़ावा मिल रहा है। शिक्षा प्रणाली में इस भाषा को स्थान देने, शोध कार्यों को प्रोत्साहित करने, और सरकारी नीतियों के तहत इसे संरक्षण देने की आवश्यकता है। यदि स्थानीय साहित्यकार, शोधकर्ता और युवा पीढ़ी इस भाषा को बढ़ावा देने के लिए सामूहिक प्रयास करें, तो कुमाऊँनी साहित्य को राष्ट्रीय और वैश्विक पहचान दिलाई जा सकती है।

Keywords: कुमाऊँनी भाषा, लोक साहित्य, सांस्कृतिक संरक्षण, डिजिटल युग, साहित्यिक विकास।

## प्रस्तावना

कुमाऊँनी भाषा उत्तराखंड राज्य के कुमाऊँ क्षेत्र में बोली जाने वाली एक समृद्ध और प्राचीन भाषा है, जो अपनी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और साहित्यिक विरासत के लिए जानी जाती है। यह इंडो-आर्यन भाषा परिवार की एक महत्वपूर्ण उपभाषा है, जिसमें लोककथाओं, लोकगीतों और ऐतिहासिक ग्रंथों की समृद्ध परंपरा मौजूद है। हालांकि,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

आधुनिक वैश्वीकरण, शहरीकरण और हिंदी व अंग्रेज़ी के बढ़ते प्रभाव के कारण कुमाऊँनी भाषा लुप्तप्राय स्थिति की ओर बढ़ रही है। वर्तमान समय में यह भाषा मुख्यतः बोलचाल में सीमित रह गई है, और इसकी लिपिबद्ध साहित्यिक परंपरा को संरक्षित करने की आवश्यकता बढ़ गई है। कुमाऊँनी भाषा में साहित्यिक सृजन का इतिहास समृद्ध रहा है, जिसमें लोकसाहित्य, ऐतिहासिक गाथाएँ, काव्य रचनाएँ, नाटक एवं आधुनिक साहित्यिक कृतियाँ शामिल हैं। लेकिन इन साहित्यिक रचनाओं को व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार और शोध का अभाव झेलना पड़ा है, जिससे इनका साहित्यिक योगदान अपेक्षित मान्यता प्राप्त नहीं कर सका। इस शोध का मुख्य उद्देश्य कुमाऊँनी भाषा के साहित्य की विकास यात्रा का अध्ययन करना है और यह समझना है कि कैसे यह भाषा साहित्य की ओर बढ़ते कदम रख रही है।

इस शोध में कुमाऊँनी भाषा के ऐतिहासिक विकास, साहित्यिक स्वरूप, लोक परंपराओं और समकालीन लेखन का विश्लेषण किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन उन चुनौतियों को भी उजागर करेगा जो कुमाऊँनी भाषा और साहित्य के संरक्षण और संवर्धन में बाधा उत्पन्न कर रही हैं, जैसे कि शिक्षा प्रणाली में भाषा की उपेक्षा, सरकारी नीतियों का अभाव, नई पीढ़ी की अरुचि और डिजिटल माध्यमों में भाषा की सीमित उपस्थिति। इस शोध का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी होगा कि कुमाऊँनी साहित्य को कैसे मुख्यधारा के साहित्य में उचित स्थान दिया जाए और इसे शैक्षिक, प्रशासनिक और साहित्यिक रूप से पुनर्जीवित किया जाए। इसके लिए साहित्यकारों, शोधकर्ताओं, सामाजिक संगठनों और सरकारी संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होगी। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष और सुझाव कुमाऊँनी भाषा और साहित्य के भविष्य के लिए एक मार्गदर्शिका साबित हो सकते हैं और भाषा के संरक्षण की दिशा में ठोस प्रयासों को बढ़ावा दे सकते हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

## कुमाऊँनी भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

कुमाऊँनी भाषा उत्तराखंड राज्य के कुमाऊँ क्षेत्र की प्रमुख भाषा है, जिसकी जड़ें प्राचीन भारत के भाषाई और सांस्कृतिक इतिहास में गहराई से जुड़ी हुई हैं। यह इंडो-आर्यन भाषा परिवार की पहाड़ी उपशाखा से संबंधित है और इसकी उत्पत्ति संस्कृत एवं प्राकृत भाषाओं से मानी जाती है। कुमाऊँनी भाषा का ऐतिहासिक विकास वैदिक काल से शुरू होकर अपभ्रंश, मध्यकालीन पहाड़ी भाषाओं, और आधुनिक हिंदी के प्रभावों के साथ हुआ है। इस क्षेत्र में कत्यूरी, चंद और गोरखा शासकों के समय कुमाऊँनी भाषा का व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता था, और इसकी साहित्यिक धरोहर लोकगीतों, लोकगाथाओं और धार्मिक ग्रंथों के रूप में संरक्षित रही। हालांकि, इस भाषा के लिखित रूप का सीमित प्रमाण मिलता है, लेकिन इसकी मौखिक परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है।

ब्रिटिश शासन के दौरान हिंदी और अंग्रेज़ी के बढ़ते प्रभाव ने कुमाऊँनी भाषा को धीरे-धीरे प्रशासनिक और शैक्षिक क्षेत्रों से अलग कर दिया। इसके बावजूद, लोक साहित्य, धार्मिक भजन, और पारंपरिक कथाओं के माध्यम से यह भाषा जीवंत बनी रही। 19वीं और 20वीं शताब्दी में कुमाऊँनी भाषा में कुछ साहित्यिक कृतियाँ लिखी गईं, लेकिन इसे अपेक्षित मान्यता नहीं मिली। आधुनिक समय में, वैश्वीकरण, शहरीकरण, और हिंदी-आधारित शिक्षा प्रणाली के कारण कुमाऊँनी भाषा का प्रयोग सीमित होता जा रहा है। हालांकि, डिजिटल युग में इस भाषा के संरक्षण और संवर्धन के लिए लेखकों, सामाजिक संगठनों, और शोधकर्ताओं द्वारा नए प्रयास किए जा रहे हैं। वर्तमान में, कुमाऊँनी साहित्य को पुनर्जीवित करने और इसे मुख्यधारा के साहित्यिक विमर्श में शामिल करने की आवश्यकता है, ताकि इसकी ऐतिहासिक धरोहर को संरक्षित रखा जा सके और नई पीढ़ी को इसकी महत्ता से परिचित कराया जा सके।

## ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भाषा का विकास

कुमाऊँनी भाषा का विकास विभिन्न ऐतिहासिक कालखंडों में सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार हुआ। प्राचीन काल में, यह भाषा पहाड़ी समुदायों की

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

मौखिक परंपराओं और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का माध्यम थी। वैदिक काल में, यह भाषा संस्कृत और प्राकृत के प्रभाव में थी, लेकिन समय के साथ इसमें स्थानीय शब्दों का समावेश होने लगा।

कत्यूरी और चंद शासकों के समय, इस भाषा में राजनीतिक और प्रशासनिक शब्दों का विकास हुआ, जिससे यह भाषा क्षेत्रीय स्तर पर मजबूत बनी। ब्रिटिश शासन के दौरान, अंग्रेज़ी और हिंदी ने आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान ले लिया, जिससे कुमाऊँनी भाषा का प्रयोग घटने लगा। हालांकि, इस अवधि में भी लोककथाओं, लोकगीतों और पारंपरिक विधाओं के माध्यम से यह भाषा जीवंत बनी रही।

स्वतंत्रता के बाद, कुमाऊँनी भाषा को मुख्यधारा में लाने के प्रयास किए गए, लेकिन हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता और शिक्षा में हिंदी-अंग्रेज़ी के प्रभाव ने इसके विकास को सीमित कर दिया। वर्तमान में, डिजिटल प्लेटफॉर्म, साहित्यिक लेखन और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से इस भाषा को पुनर्जीवित करने के प्रयास हो रहे हैं।

**प्रमुख भाषाई विशेषताएँ और शब्द संरचना**

कुमाऊँनी भाषा की भाषाई विशेषताएँ इसे अन्य पहाड़ी भाषाओं से अलग बनाती हैं। यह भाषा इंडो-आर्यन भाषा परिवार का हिस्सा है और इसकी ध्वन्यात्मकता, व्याकरण और शब्द संरचना में विशिष्टता पाई जाती है।

1. ध्वन्यात्मकता (Phonetics) – कुमाऊँनी भाषा में नरम और कठोर ध्वनियों का संतुलन पाया जाता है। इसमें कई शब्द ऐसे हैं जो हिंदी से मिलते-जुलते हैं, लेकिन उनका उच्चारण अलग होता है।

2. व्याकरण (Grammar) – कुमाऊँनी में क्रिया-वचन मेल, लिंग भेद, और प्रत्ययों का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है। संज्ञा और विशेषणों का प्रयोग स्थानीय संदर्भों के अनुसार होता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

3. शब्दावली (Vocabulary) – इस भाषा की शब्दावली में संस्कृत, प्राकृत और हिंदी के शब्दों का मिश्रण पाया जाता है। उदाहरण के लिए, पारंपरिक शब्दों में 'भल' (अच्छा), 'नान' (छोटा), 'बौज्यू' (बड़ा भाई) जैसे शब्द शामिल हैं।

4. वाक्य संरचना (Sentence Structure) – कुमाऊँनी भाषा में विषय-क्रिया-कर्तृ क्रम देखा जाता है, जो इसे अन्य भारतीय भाषाओं से भिन्न बनाता है।

कुल मिलाकर, कुमाऊँनी भाषा की व्याकरणिक और ध्वन्यात्मक विशेषताएँ इसे एक समृद्ध भाषाई पहचान प्रदान करती हैं, जिसे संरक्षित करने की आवश्यकता है।

**अन्य पहाड़ी भाषाओं से संबंध और भिन्नताएँ**

कुमाऊँनी भाषा उत्तराखंड की अन्य पहाड़ी भाषाओं जैसे गढ़वाली, जौनसारी और भोटी से कई समानताएँ रखती है, लेकिन इसके कुछ विशिष्ट अंतर भी हैं।

1. गढ़वाली और कुमाऊँनी – दोनों भाषाएँ इंडो-आर्यन भाषा परिवार से संबंधित हैं और व्याकरणिक संरचना में समानता रखती हैं। लेकिन उच्चारण और कुछ शब्दावली भिन्न होती हैं। उदाहरण के लिए, गढ़वाली में 'पाणी' (पानी) कहा जाता है, जबकि कुमाऊँनी में इसे 'पैणि' कहा जाता है।

2. जौनसारी और कुमाऊँनी – जौनसारी भाषा में तिब्बती और पंजाबी प्रभाव देखा जाता है, जबकि कुमाऊँनी अधिक संस्कृतनिष्ठ है।

3. भोटी और कुमाऊँनी – भोटी भाषा तिब्बती-बर्मी भाषा परिवार से संबंधित है, जबकि कुमाऊँनी पूरी तरह से इंडो-आर्यन भाषा परिवार का हिस्सा है।

इन भाषाओं के साथ कुमाऊँनी भाषा का ऐतिहासिक रूप से संपर्क रहा है, लेकिन सामाजिक और भौगोलिक भिन्नताओं के कारण इसकी अपनी विशिष्ट पहचान बनी हुई है। इस भाषा के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए इसे आधुनिक शिक्षा और डिजिटल माध्यमों में और अधिक बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

## शोध की प्रासंगिकता और महत्त्व

कुमाऊँनी भाषा उत्तराखंड की एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय भाषा है, जिसका सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्त्व अत्यधिक व्यापक है। यह भाषा न केवल एक संचार माध्यम है, बल्कि इसमें लोककथाएँ, लोकगीत, कहावतें, पौराणिक आख्यान, नाटक, एवं आधुनिक साहित्यिक कृतियाँ समाहित हैं, जो इसकी साहित्यिक धरोहर को समृद्ध बनाते हैं। वर्तमान में, वैश्वीकरण, आधुनिक शिक्षा प्रणाली में क्षेत्रीय भाषाओं की उपेक्षा, और हिंदी व अंग्रेज़ी के बढ़ते प्रभाव के कारण कुमाऊँनी भाषा का प्रयोग सीमित होता जा रहा है। ऐसे में, इस भाषा के साहित्यिक विकास की संभावनाओं को समझना और उसके संरक्षण के उपाय खोजना आवश्यक हो गया है। इस शोध का उद्देश्य कुमाऊँनी भाषा के साहित्यिक स्वरूप का विस्तृत अध्ययन करना और यह जानना है कि यह भाषा किस प्रकार साहित्य की ओर अपने कदम बढ़ा रही है।

यह अध्ययन इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कुमाऊँनी भाषा के मौजूदा साहित्यिक परिदृश्य, इसके विकास में आ रही चुनौतियों, और इसके संवर्धन के उपायों पर ध्यान केंद्रित करेगा। यह शोध यह विश्लेषण करेगा कि कैसे कुमाऊँनी साहित्य को समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों में उचित स्थान दिया जा सकता है और इसे शिक्षा, प्रशासन, और डिजिटल माध्यमों में अधिक सक्रिय रूप से शामिल किया जा सकता है। साथ ही, इस अध्ययन में सरकारी प्रयासों, शोधकार्यों, साहित्यिक आंदोलनों और स्थानीय लेखकों की भूमिका को भी समझा जाएगा, ताकि कुमाऊँनी भाषा के साहित्य को मुख्यधारा में लाने के लिए प्रभावी नीतियाँ बनाई जा सकें। यह शोध न केवल भाषाविज्ञान और साहित्य के क्षेत्र में योगदान देगा, बल्कि समाज को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने और क्षेत्रीय भाषाओं के महत्व को पुनर्स्थापित करने में भी सहायक होगा।

## कुमाऊँनी साहित्य का प्रारंभिक स्वरूप

कुमाऊँनी साहित्य का प्रारंभिक स्वरूप मुख्यतः लोक साहित्य, धार्मिक ग्रंथों और ऐतिहासिक कथाओं के रूप में देखने को मिलता है। यह साहित्य मुख्य रूप से मौखिक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

परंपराओं पर आधारित था, जो पीढ़ी दर पीढ़ी लोकगीतों, लोककथाओं, भजन, कहावतों और पहेली के माध्यम से संरक्षित रहा। इन कथाओं और गीतों में सामाजिक, धार्मिक, और सांस्कृतिक मूल्यों को विशेष स्थान दिया गया। लोकगाथाएँ जैसे मालूशाही, हरू हिट, गणाई का युद्ध इत्यादि, कुमाऊँ क्षेत्र की ऐतिहासिक घटनाओं और वीर गाथाओं को प्रस्तुत करती हैं। धार्मिक दृष्टि से, भक्ति परंपरा में कुमाऊँनी भाषा का प्रयोग भजन और लोकधुनों में देखने को मिलता है, जिनका मुख्य उद्देश्य भक्ति भावना को जन-जन तक पहुँचाना था। लिखित साहित्य की बात करें तो प्रारंभिक काल में कुमाऊँनी भाषा में ताम्रपत्रों, शिलालेखों और प्रशस्तियों में इसका उल्लेख मिलता है। कत्यूरी और चंद राजवंशों के समय धार्मिक ग्रंथों, लोकगाथाओं और ऐतिहासिक घटनाओं को संस्कृत, अपभ्रंश और कुमाऊँनी मिश्रित भाषा में लिपिबद्ध किया गया। धीरे-धीरे, इस भाषा में कविताएँ, नाटक और लोक नाट्य रूप विकसित हुए, जिनमें पौना, जागर और हुड़कीबौल जैसी विधाओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा। कुमाऊँनी भाषा में साहित्यिक लेखन को मजबूती 19वीं और 20वीं शताब्दी में मिली, जब इसे अधिक संगठित रूप से लिखा और संरक्षित किया जाने लगा। आज कुमाऊँनी साहित्य, लोक परंपरा से आगे बढ़कर कविता, उपन्यास, नाटक, और समकालीन लेखन के रूप में विकसित हो रहा है, लेकिन इसे मुख्यधारा में स्थापित करने के लिए अधिक शोध और संरक्षण की आवश्यकता है।

## आधुनिक कुमाऊँनी साहित्य

कुमाऊँनी साहित्य में नवजागरण और पुनर्जागरण कुमाऊँनी साहित्य में नवजागरण और पुनर्जागरण का दौर मुख्य रूप से 19वीं और 20वीं शताब्दी में आया, जब समाज में शिक्षा, सामाजिक जागरूकता और आधुनिक विचारधारा का विस्तार हुआ। इस काल में साहित्यिक गतिविधियाँ केवल लोकगीतों और धार्मिक भजनों तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि कुमाऊँनी भाषा में कविता, कहानियों और नाटकों का लेखन भी शुरू हुआ। स्वतंत्रता आंदोलन के प्रभाव में कुमाऊँनी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना, समाज सुधार और किसानों के अधिकारों की झलक मिलने लगी। इस काल में ओजस्वी कविता, वीर रस के गीत, और

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

समाज सुधार से जुड़े लेख लिखे जाने लगे। इस समय के साहित्य ने जनता को जागरूक करने का काम किया और जातिवाद, सामाजिक कुरीतियों, और महिलाओं की स्थिति जैसे विषयों को भी उठाया।

**प्रमुख कुमाऊँनी कवि एवं लेखक**

इस नवजागरण काल में कई प्रमुख साहित्यकारों ने कुमाऊँनी भाषा को समृद्ध किया। पं. गोविंद बल्लभ पंत, शेर सिंह बिष्ट 'अणपढ़', मोहन उप्रेती, और गौरी दत्त पांडे जैसे लेखकों ने कुमाऊँनी साहित्य को नई दिशा दी। मोहन उप्रेती का नाटक "राजुला-मालूशाही" कुमाऊँनी लोकसंस्कृति और लोकगाथाओं पर आधारित एक महत्वपूर्ण कृति है। इसी तरह, गौरी दत्त पांडे ने कुमाऊँ के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन को अपने लेखन में अभिव्यक्त किया। इनके लेखन ने कुमाऊँनी साहित्य को नई पहचान दी और इसे मुख्यधारा के साहित्य के साथ जोड़ा।

**समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियाँ**

आज के दौर में कुमाऊँनी साहित्य में सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक विषयों की अभिव्यक्ति अधिक होने लगी है। समकालीन साहित्यकार कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक के माध्यम से आधुनिक समाज के संघर्ष, पर्यावरणीय असंतुलन, प्रवासी जीवन, और पहाड़ों की बदलती जीवनशैली को प्रस्तुत कर रहे हैं। समकालीन लेखकों में डॉ. नंदा देवी भट्ट, नरेश खनका, और हीरा सिंह राणा जैसे नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने कुमाऊँनी साहित्य को समृद्ध किया। इसके अलावा, कई युवा लेखक भी ब्लॉग, सोशल मीडिया और स्वतंत्र प्रकाशन माध्यमों के जरिये कुमाऊँनी साहित्य को आगे बढ़ा रहे हैं।

**डिजिटल युग में कुमाऊँनी साहित्य**

डिजिटल युग में कुमाऊँनी साहित्य को नई पहचान मिल रही है। इंटरनेट के विस्तार ने इस भाषा को ऑनलाइन पत्रिकाओं, ब्लॉग्स, ई-पुस्तकों और ऑडियो-विजुअल माध्यमों में जगह दिलाई है। आज फेसबुक, यूट्यूब, पॉडकास्ट और वेबसाइटों के माध्यम से

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

कुमाऊँनी कविताएँ, कहानियाँ और लोकगीत साझा किए जा रहे हैं। कुमाऊँनी भाषा में डिजिटल पुस्तकालय और साहित्यिक मंच बनाए जा रहे हैं, जिससे नए लेखकों को अपनी रचनाएँ प्रकाशित करने का अवसर मिल रहा है। हालांकि, इसे और अधिक संरक्षित और विस्तारित करने के लिए सरकार, शिक्षण संस्थानों और स्थानीय संगठनों को मिलकर काम करने की आवश्यकता है, ताकि यह भाषा और साहित्य आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रह सके।

## कुमाऊँनी भाषा और साहित्य की सामाजिक व सांस्कृतिक भूमिका

कुमाऊँनी भाषा और साहित्य कुमाऊँ क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक संरचना और ऐतिहासिक परंपराओं के अभिन्न अंग हैं। यह भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि इसके लोकगीतों, कहावतों, गाथाओं और नाटकों में समाज की भावनाएँ, रीति-रिवाज, परंपराएँ और सामूहिक चेतना अभिव्यक्त होती हैं। लोक साहित्य के रूप में, कुमाऊँनी भाषा ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोककथाओं, भजनों, जागर, हुड़का बौल और लोक नृत्यों के जरिए समाज में नैतिक मूल्यों को बनाए रखा है। इस भाषा में रचित साहित्यिक कृतियाँ केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सामाजिक शिक्षाओं, ऐतिहासिक घटनाओं और जनचेतना को भी व्यक्त करती हैं। उदाहरण के लिए, मालूशाही की लोकगाथा न केवल वीरता और प्रेम की कथा है, बल्कि यह कुमाऊँ के समाज की तत्कालीन सामाजिक स्थिति को भी दर्शाती है।

कुमाऊँनी साहित्य सामाजिक रूप से जाति व्यवस्था, लैंगिक असमानता, पलायन, ग्रामीण जीवन के संघर्ष और सांस्कृतिक बदलावों को उजागर करता है। आधुनिक कुमाऊँनी साहित्य में प्रवासी जीवन, पर्यावरण संरक्षण और पहाड़ों के विकास जैसे विषयों को प्राथमिकता मिल रही है। हीरा सिंह राणा, मोहन उप्रेती और नंदा देवी भट्ट जैसे साहित्यकारों ने अपने लेखन में समाज की वास्तविकताओं को प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त, कुमाऊँनी साहित्य सांस्कृतिक एकता और सामाजिक सुधार का संदेश देता है। डिजिटल युग में, इस साहित्य का प्रभाव बढ़ा है और इसके संरक्षण के प्रयास किए जा रहे

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

हैं। आज यह भाषा सामाजिक चेतना का एक सशक्त माध्यम बन रही है, जिसे संरक्षित और प्रचारित करने की आवश्यकता है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ अपनी जड़ों से जुड़ी रह सकें।

## कुमाऊँनी भाषा के समक्ष चुनौतियाँ और समाधान

### कुमाऊँनी भाषा के समक्ष चुनौतियाँ

कुमाऊँनी भाषा, जो उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र की सांस्कृतिक और भाषाई पहचान का प्रतीक है, आज कई चुनौतियों का सामना कर रही है। वैश्वीकरण, शहरीकरण और हिंदी व अंग्रेज़ी के बढ़ते प्रभाव के कारण यह भाषा धीरे-धीरे दैनिक जीवन और आधिकारिक कार्यों से बाहर होती जा रही है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कुमाऊँनी भाषा को कोई औपचारिक स्थान नहीं मिला, जिससे नई पीढ़ी का इस भाषा से संपर्क कम हो रहा है। इसके अलावा, भाषा का आधिकारिक मानकीकरण न होने के कारण इसकी लिपि, व्याकरण और शब्दावली में एकरूपता की कमी देखी जाती है।

एक और बड़ी चुनौती यह है कि कुमाऊँनी भाषा में साहित्यिक सृजन और प्रकाशन सीमित हैं। इस भाषा में लिखने वाले साहित्यकारों की संख्या कम है और स्थानीय स्तर पर प्रकाशित साहित्य को व्यापक पाठक वर्ग नहीं मिल पाता। इसके अलावा, डिजिटल प्लेटफार्मों पर कुमाऊँनी भाषा की उपस्थिति भी सीमित है, जिससे इसका प्रसार और संरक्षण कठिन हो जाता है। इन सबके अलावा, सरकारी नीतियों में कुमाऊँनी भाषा को संरक्षित करने के लिए ठोस कदमों की कमी भी इसके अस्तित्व को खतरे में डाल रही है।

### संभावित समाधान

कुमाऊँनी भाषा के संरक्षण और संवर्धन के लिए कई प्रभावी कदम उठाए जा सकते हैं। सबसे पहले, शिक्षा प्रणाली में इस भाषा को उचित स्थान दिया जाना चाहिए। प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में कुमाऊँनी को एक विषय के रूप में शामिल करने से नई पीढ़ी इससे परिचित होगी। इसके अलावा, कुमाऊँनी भाषा में पाठ्यपुस्तकों, कहानियों और शोध कार्यों का विस्तार करने की आवश्यकता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

डिजिटल माध्यमों के विकास से कुमाऊँनी भाषा को ऑनलाइन प्लेटफार्मों, ई-पुस्तकों, पॉडकास्ट, और यूट्यूब जैसे माध्यमों में शामिल किया जा सकता है। सोशल मीडिया पर कुमाऊँनी भाषा में सामग्री प्रकाशित करने से इसका प्रचार-प्रसार संभव होगा। स्थानीय सरकार और सांस्कृतिक संगठनों को इस भाषा के संरक्षण के लिए नीतियाँ बनानी चाहिए और क्षेत्रीय साहित्यकारों, कवियों और लोक कलाकारों को प्रोत्साहन देना चाहिए।

सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा कुमाऊँनी भाषा को संवर्धित करने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम, सेमिनार, और साहित्यिक महोत्सवों का आयोजन भी आवश्यक है। युवाओं को इस भाषा में लेखन, ब्लॉगिंग और शोध कार्यों में प्रेरित करना भी एक प्रभावी समाधान हो सकता है। इन प्रयासों से कुमाऊँनी भाषा न केवल संरक्षित होगी, बल्कि इसे वैश्विक मंच पर भी पहचान मिलेगी, जिससे यह आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रह सकेगी।

## निष्कर्ष और सुझाव

कुमाऊँनी भाषा और साहित्य उत्तराखंड की सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न अंग हैं, लेकिन वर्तमान में यह भाषा वैश्वीकरण, शहरीकरण, हिंदी और अंग्रेज़ी के बढ़ते प्रभाव, और शिक्षा प्रणाली में इसकी उपेक्षा जैसी चुनौतियों का सामना कर रही है। ऐतिहासिक रूप से, कुमाऊँनी भाषा ने लोक साहित्य, धार्मिक ग्रंथों, सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम प्रदान किया है, लेकिन वर्तमान में यह मुख्य रूप से मौखिक परंपरा तक सीमित रह गई है। भाषा के आधिकारिक मानकीकरण, शैक्षिक पाठ्यक्रमों में इसकी अनुपस्थिति और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सीमित उपस्थिति इसके संरक्षण में प्रमुख बाधाएँ हैं। हालांकि, आधुनिक तकनीकी संसाधनों, डिजिटल साहित्य, और सामाजिक जागरूकता अभियानों के माध्यम से इस भाषा के पुनरुत्थान की संभावनाएँ भी मौजूद हैं।

कुमाऊँनी भाषा के संरक्षण के लिए कुछ ठोस कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। सबसे पहले, शिक्षा प्रणाली में कुमाऊँनी भाषा को एक विषय के रूप में शामिल किया

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

जाना चाहिए ताकि नई पीढ़ी इस भाषा को पढ़ और लिख सके। स्थानीय साहित्यकारों, कवियों और लेखकों को प्रोत्साहित करने के लिए सरकारी अनुदान और शोध अवसरों की व्यवस्था की जानी चाहिए। इसके अलावा, डिजिटल माध्यमों जैसे सोशल मीडिया, ब्लॉग, यूट्यूब, और पॉडकास्ट के माध्यम से कुमाऊँनी भाषा को व्यापक स्तर पर प्रसारित करने की आवश्यकता है। स्थानीय सांस्कृतिक कार्यक्रम, साहित्यिक महोत्सव और सेमिनारों के आयोजन से इस भाषा को नया जीवन दिया जा सकता है। सरकार, गैर-सरकारी संगठन, और स्थानीय समुदाय मिलकर यदि इस दिशा में ठोस कदम उठाते हैं, तो कुमाऊँनी भाषा और साहित्य को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है। इन प्रयासों से यह भाषा न केवल संरक्षित होगी, बल्कि इसे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान भी मिलेगी।

## संदर्भ सूची

1. बिष्ट, आर. (2018). *उत्तराखंड की भाषाएँ और बोलियाँ.* देहरादून: पर्वतीय प्रकाशन।
2. पांडे, जी. (2020). *कुमाऊँनी साहित्य का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य.* नैनीताल: उत्तराखंड साहित्य अकादमी।
3. शाह, डी. (2017). *कुमाऊँनी भाषा और इसकी सामाजिक भूमिका.* अल्मोड़ा: गढ़वाल विश्वविद्यालय प्रकाशन।
4. जोशी, ए. (2019). *लोक साहित्य में कुमाऊँनी भाषा का योगदान.* दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
5. उप्रेती, एम. (2016). *कुमाऊँनी नाटक और कविता: एक समकालीन अध्ययन.* हल्द्वानी: उत्तराखंड साहित्य संगम।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 01, (January-March 2025)

6. चंद्रा, एस. (2021). *डिजिटल युग में कुमाऊँनी भाषा और साहित्य का प्रसार.* शोध पत्र, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल।

7. भारतीय लोक भाषा संस्थान. (2015). *भारतीय उपमहाद्वीप की क्षेत्रीय भाषाएँ और उनका विकास.* नई दिल्ली: साहित्य अकादमी।

8. नेगी, के. (2022). *कुमाऊँनी भाषा की वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाएँ.* शोध लेख, हिमालयन स्टडीज जर्नल।

9. सिंह, पी. (2014). *कुमाऊँ की भाषा, समाज और संस्कृति.* पिथौरागढ़: कुमाऊँनंदन प्रकाशन।

10. राष्ट्रीय भाषा आयोग. (2013). *भारत की क्षेत्रीय भाषाएँ: संरक्षित करने की चुनौतियाँ और प्रयास.* नई दिल्ली: भाषा विकास संस्थान।